पं. भगवानदास जैन (1902–2000)

बुन्देलखंड में ललितपुर जिले का हर गांव जैन परिवार सहित रहा। वहीं ललितपुर से 12 मील दूर सिलगन में सन् 1902 में श्री कुंवरजी के यहां आपका जन्म हुआ। क्षेत्रपाल–ज्ञानस्थली थी, वहां प्रारंभिक शिक्षा प्रारंभ हुई। धर्म के संस्कार बने। जैन ग्रंथ, साहित्य पढ़ने की रुचि बढ़ी। तलस्पर्शी ज्ञान के धारक बने। संयोग ऐसा बना कि 1920 में मन्दसौर जाना हुआ। मंदसौर इतना भाया कि वही रम गये। आयुर्वेद में रुचि बढ़ी। ज्ञान का अच्छा क्षमोपसम था ही फलत: नाडी ज्ञाता वैद्य बने। जनकपुरा के जैन मंदिर (मंदसौर) के पास निवास बना। सागर के प्रसिद्ध परिवार जौहरी लक्ष्मणदास की इकलौती पुत्री के साथ विवाह हुआ। सागर ससुराल होने के कारण निरंतर बुंदेलखंड से जुड़े रहे। वर्णीजी के अनन्य भक्त रहे। मंदसौर में जैन पाठशालाये प्रारंभ की। अपने सहयोगी स्वभाव, ज्ञान, दबंग कार्यशैली से मंदसौर का आम जन बहुत प्रभावित हुआ एवं आप मंदसौर नगर पालिका के प्रथम अध्यक्ष बने। अपने कार्यकाल में पालिका भवन एवं मुख्य मार्गो का निर्माण कराया। सन् 1952, 1957 के मध्यभारत विधानसभा में मंदसौर विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। 1968 में हिन्द महासभा के प्रांतीय अध्यक्ष बने। महासभा का अधिवेशन 'सागर' में हुआ। अध्यक्ष की शोभायात्रा का विवरण प्रांतीय पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित हुआ।

जीवन भर मंदसौर के आस पास के साथ पूरे मध्यभारत में जैन सामाजिक कार्यो के क्रियान्वयन में सक्रिय कार्य किया। अच्छे तैराक व योगी रहे।

जैन अध्यात्म एवं व्यवहारिक विषयों में प्रामाणिक, सिद्धहस्त, दबंग वक्ता रहे। बहुत ही कम मे लोगों में विषय वस्तु का विवेचन, स्पष्टता एवं साहस से करने का इतना जज़्बा होता है, जितना आप में देखा गया। 20वीं सदी की लगभग सभी अ.भा. संस्थाए, विद्वत परिषद, महासभा परिषद, तीर्थ क्षेत्र कमेटी से जुड़े रहे। आपके सहयोग से अनेक छात्रों ने अपनी पढाई पूरी की। सन् 2000 में लंबी बीमारी के पश्चात आप पंचतत्व में विलीन हो गये। – संकलन, डॉ. पी.सी. जैन, चकराघाट, सागर

धन से मलिन होता धर्म

सम्पादकीय – वर्तमान समय ग्लैमर और चमक दमक का समय है। हर ओर धनाढ्य वर्ग के लोग धन–वैभव का प्रदर्शन करने का अवसर खोजते दिखाई पड़ते हैं। पारिवारिक, सामाजिक अथवा धार्मिक सभी अवसरों पर धन और शान शौकत का भरपूर दिखावा किया जाता है। यह व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा के आकलन का आधार बन चुका है कि अमुक अवसर पर उसने कितना धन खर्च किया फिर चाहे वह बच्चे के जन्म, विवाह जैसे खुशी के अवसर हो या मृत्यु पश्चात उठावना, तेरहवीं आदि जैसे शोकाकुल क्षण।

हमारा जैन धर्म यूं तो त्याग और अपरिग्रह के लिये पहचाना जाता है, किंतु वर्तमान में धन वैभव के दिखावे से यह भी अछूता नहीं रहा है। धार्मिक आयोजनों में सादगी और सौहार्द का स्थान अब धन वैभव और ग्लैमर की चकाचौंध ने ले लिया है। पयूर्षण पर्व हो या दीपावली और महावीर जयंती, पंचकल्याणक महोत्सव हो या मुनिसंघों का आगमन, सभी अवसरों पर भारी तामझाम, विशाल वैभवपूर्ण राजसी छवि वाले पांडाल और मंच सज्जा, लाइट और साउंड इत्यादि की चकाचौंध में धर्म की मूल भावना, सात्विकता कहीं लुप्त प्राय: हो चली है। इन सभी कार्यक्रमों में जन सामान्य की रूचि कुछ धार्मिक लाभ लेने की होती है किंतु यहां भी 'धन' ही हावी रहता है। आयोजकों का मुख्य जोर बोलियों, चन्दे आदि द्वारा अधिक से अधिक धन संग्रह का रहता है और श्रावक संतवाणी सुनने को तरस जाते हैं। भक्तामर पाठ जैसे आयोजनों को भी अब गणनानुसार राशि लेकर धर्म प्रभावना का नाम दिया जा रहा।

धन का यह प्रदर्शन यहीं तक सीमित नहीं है। हमारी दैनिक धार्मिक क्रियायें भी अर्थप्रधान हो चुकी है। श्री जी का मंगल अभिषेक हो या पूजन, स्वर्ण, रजत और कहीं कहीं रत्नजडित पात्रों में किया जाता है । भगवान का जाप भी सोने या चांदी के मोतियों का माला से किया जा रहा है, इसके पीछे तर्क यह कि उत्कृष्ट पात्रों और उपकरणों का उपयोग करने से उत्कृष्ट फल की प्राप्ति होती है। हमारा धर्म मूलत: 'भावों की शुचिता' का धर्म है अर्थात शुद्ध और उत्कृष्ट भावों से उत्कृष्ट फल की प्राप्ति होती है। अब इन बहुमूल्य पात्रों और उपकरणों की साज संभाल और सुरक्षा में श्रावक के भाव कितने शुद्ध और स्थिर रह पाते है इसका विवेचन व्यर्थ है। वरन् इन सब से व्यक्ति में मान कषाय और परस्पर ईर्ष्या तथा वैमनस्य जरूर बढ़ता है। किंतु खेद जनक है कि इन सब क्रियाओं के प्रोत्साहन में हमारे साधु–सन्तों का भी समर्थन है। कितना अच्छा हो कि हमारे पूज्य आचार्य व साधुगण श्रावकों को धन को परे रखकर भावों की निर्मलता पर जोर दें।

हर छोटे बड़े धर्मिक समारोह में अनेक प्रकार की बोलियों लगाने की प्रथा बढ़ती जा रही है, इनमें ऊंची ऊंची बोलियाँ लेने वाले धनाढ्यों का ही बोलबाला रहता है उन्हें मंचासीन कर सम्मानित किया जाता है जबकि मध्यम और निम्न वर्ग मूक दर्शकों की भूमिका में रह जाते हैं। ऊँची–ऊँची बोली लेने के पीछे स्वयं को सर्वश्रेष्ठ दिखाने का अभिमान, नाम तथा प्रसिद्ध की आकांक्षा ही रहती है और इस होड़ में आगे निकलने के नाम पर लोग 'येन केन प्रकरेण' अर्जित काले धन को सफेद कर लेते हैं। इस प्रकार के आयोजन क्या कहीं न कहीं देश में भ्रष्टाचार बढ़ाने में अपना योगदान नहीं दे रहे। हमारे साधु संतों और विद्वानों की चाहिये कि अनैतिक साधनों से अर्जित आय द्वारा लाखों करोड़ो की बोलियाँ लेने बालों को शुचिता का संदेश देते हुयें ईमानदारी से कमायें धन का यथोचित हिस्सा दान करने के लिये प्रोत्साहित करें। मंच पर ईमानदार छवि वाले लघुदानवीरों का सम्मान किया जायें तो समाज में सदाचार का संदेश प्रसारित होगा। दूसरी ओर सीमित धनार्जन से धन का दुरूपयोग भी रूकेगा साथ ही समाज में शांति और सद्भाव भी बढ़ेगा क्योंकि वर्तमान समय में जैन समाज में बढ़ते असंतोष और अशांति का एक बड़ा कारण धन की प्रचुरता है। हमारे मंदिरों और धार्मिक ट्रस्टों में धन संबंधी विवाद न केवल समाज में वैमनस्य बढ़ा रहे है, बल्कि समाज की बदनामी का कारण भी बन रहे है। समाज में धनाढ्यों और साधारण वर्गो के बीच खाई निरंतर बढ़ रही हैं। धनाढ्य में एक ओर धन का अभिमान बढ़ रहा है वहीं साधन विहीन लोग ईर्ष्या और द्वेष से कुंठित हो रहे हैं। सारांश यह कि सभी लोग पापकर्म का आश्रव कर रहे हैं अर्थात यह धन हमारे धर्म को मलिन कर रहा है। अतएव समय है कि हम अपने विवेक से भले बुरे की पहचान करें और स्वयं को अधर्म से बचायें।

– **अनुपमा जैन**, सहसंपादिका

दोस्त

चेहरा भूल जाओगे तो शिकायत नहीं करेंगे।
नाम भूल जाओगे तो गिला नहीं करेंगे।
और मेरे दोस्त दोस्ती कि कसम है तुझे।
जो दोस्ती भूल जाओगे तो कभी माफ नहीं करेंगे।
खुशी से दिल आबाद करना मेरे दोस्त।
और गम को दिल से आजाद करना।
हमारी बस इतनी गुजारिश है मेरे दोस्त।
कि दिल से एक बार याद हमें जरुर ही करना ।
जिन्दगी सुंदर है पर मुझे जीना नहीं आता।
हर चीज में नशा है पर मुझे पीना आता।
सब जी सकते है मेरे बिना दोस्त।
पर मुझे ही किसी के बिना जीना नहीं आता।
आज भीगी है मेरी पलके तेरी याद में।
आकाश भी सिमट गया है अपने आप में।
ओस की बूंदे ऐसे बिखरी पत्तो पर,
मानो चाँद भी रोया है मेरे दोस्त की याद में।
हो नहीं सकता मुझे आपकी याद न आये।
भूल के भी वो एहसास न आये।
आप भूले तो आप पे आच न आये मेरे दोस्त।
मैं भुला तो खुदा करे मुझे अगली सांस ही न आये।
छोटी सी बात पर शिकवा न करना।
कोई भूल हो जाए तो माफ करना।
नाराज़ जब होना, हम दोस्ती तोड़ देंगे।
क्योंकि ऐसा तब होगा जब हम दुनिया छोड़ देंगे।

****

मेरे दोस्तों के लिए समर्पित ये कविता, जीवन में हर चीज इंसान खरीद सकता है परन्तु सच्चा और अच्छा दोस्त तो सिर्फ नसीब वालों को बिना मूल्य ही मिलता है।

– **संजय जैन, मुंबई**

पाठको की कलम से ...

गोलालारीय दर्शन का विवाह विशेषांक बहुत उपयोगी और लाभप्रद था। मुखपृष्ठ लेख प्रशंसनीय रहा। समाज में वैवाहिक प्रक्रिया की विसंगति के कारण अविवाहित युवकों की संख्या बढ़ रही है। आपसे अनुरोध है कि एक विशेषांक बड़ी उम्र के अविवाहित युवक युवतियों के लिये भी प्रकाशित करें ताकि समाज में ही उन्हें उपयुक्त संबंध मिल सकें। – **श्रीमती शोभा जैन, रतलाम**

गोलालारीय दर्शन दिसम्बर 2013 के विवाह योग्य प्रत्याशी विशेषांक के लिए साधुवाद। इस प्रयत्न हेतु हार्दिक बधाईयां एवं शुभकामनाएं। इससे समाज की एक ज्वलन्त समस्या का निदान हो सकेगा। गोलालारीय समाज का वार्षिक सम्मेलन शीघ्र इन्दौर में हो ऐसी तीव्र कामना है।

– **ए.एल. फणीश, विदिशा।**

"मंजिले तो मिल ही जायेगी, भटक के ही सही। गुमराह तो वो है जो घर से निकले ही नहीं।"